ISSN : **2583-3189 (E), 2583-0775 (P)**
Year-02, Volume-02, Issue-03

AMOGHVARTA

डॉ. अरविन्द सिंह यादव,
Page No. 117 - 119

AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

xksnku esa lkekftd ljksdkj ^^xzkE; thou ds lanHkZ esa^^

ORIGINAL ARTICLE

Author
M,- vjfoUn flag ;kno
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय
पिछोर, जिला शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

'kks/k lkj

çsepan th lekt ds dFkkdkj gSaA xksnku esa lcdh dFkk gS] fdUrq igys xk; dks ysa xk; ls dFkk vkjEHk gksrh gS] xksnku ij lekIr gksrh gSA çsepan 0;oLFkk] 0;fä vkSj fopkj rhuksa esa lkeatL; vkSj lers; pkgrs gSaA os fdlh oxZ ds fy, ugÈ lEiw.kZ euq"; ds fy;s çpfrr gSA gj fdlku dks xk; pkfg, xkjs ds fy;s] cSy ds fy;s] xkscj ¼[kkn½ ds fy;sA vko';drk vkSj mi;ksfxrk dh pruk us xk; dks iwT; cuk fn;kA xksnku dk <kapk Åij ls vkfFkZd&jktuhfrd gS] fdUrq ekuoh vkSj lkL—frd gSA xkao vkSj 'kgj vyx&vyx vFkZ0;oLFkk okys gSA xkao Hkkjr dh igpku gS] ;fn lgh vFkksZa esa Hkkjr dks tkuuk gS rks gesa Hkkjr vkSj Hkkjrh; xzkeksa dks tkuuk gksxkA xksnku viuh jpuk&dky ds lEiw.kZ Hkkjrh; tueuql dh egkxkFkk gSA eqU'kh çsepan ds dkyt;h miU;kl xksnku dk vusd rjg ls 0;k[;kf;r vkSj fo'yf"kr fd;k x;k gSA çLrqr 'kks/k i= esa xzkeh.k thou ds ifjç{; esa xksnku dk foospu fd;k x;k gSA

eq[; 'kCn
lkL—frd] tueuql] ifjç{;] xksnkuA

गोदान का ढाँचा ऊपर से आर्थिक–राजनीतिक है, किन्तु मूलतः मानवी और सांस्कृतिक है, धार्मिक कहना भी अनुचित न होगा। गाँव और शहर अलग–अलग अर्थव्यवस्था वाले हैं। ठाट–बाट एवं शिक्षा–दीक्षा किन्तु मानवी करूणा, उदारता एवं क्षुद्रता और संकोच दोनों के एक हैं। गाँव में धनिया, पुनिया जैसी उदार महिलाएँ हैं, तो शहर में गोविन्दी, चुहिया और पारवती, मालती की करूणा एवं उदारता एक जैसी है। पति, पुत्र, पत्नी, परिवार सेवा पर गाँव का एकाधिकार नहीं है। प्रेमचंद्र स्त्री के अविवाह को स्वीकार करते हैं। गोदान की सभी स्त्रियां विवाहित हैं, विवाहित स्त्री को सुख है, दुख है, उसमें प्रतिरोधकता है, सहनशीलता है, लड़ती–झगड़ती हैं किन्तु विद्रोह और अलगाव नहीं है। गोदान की स्त्री आधुनिक है। नोहरी बदचलन है। बुढ़ापे के विवाह का यह फल भी है। मालती अत्यन्त आधुनिक होकर ग्रहस्थ बनती है। मां न होकर भी बच्चों की सेवा मां जैसी करती है। पत्नी न होकर भी मेहता को स्वयं बनाकर खिलाती है। प्रेमचंद्र आदर्श स्त्री, पुरूष उपस्थित करना चाहते हैं। ऐसे स्त्री, पुरूषों का आदर्श भारत की संस्कृति और समाज में है। प्रेमचंद्र मनुष्य को देवता बनाना चाहते हैं। प्रेमचंद्र कहते हैं, प्रत्येक मुनष्य में देवता है। उसे स्थितियां दो वह देवतत्व को उजागर करें। प्रेमचंद्र कहते हैं निर्धनता और धन से परे। निर्धनता और

धन दोनों देव विरोधी हैं। देव तो कौन कहें? ये मनुष्य को सामान्य भी नहीं बनने देते। फिर भी धन से निर्धन में मनुष्य अधिक है इसीलिए गाँव का मनुष्य तात्कालिक है।

होरी गाँव की वह गाय है जिसे सभी दुहना चाहते हैं। इससे कोई मुक्त नहीं है। स्वयं होरी मौका पाकर दुहता है। भोला को दुहता है बाँस बेचने में भाई को धोखा देता है होरी और गोबर दोनों सूद लगाते हैं, किन्तु सबकी सीमा है होरी गोबर की सीमा है। खन्ना और तंखा की सीमा है, राय साहब और राजा की सीमा है। कोई देना नहीं चाहता है, केवल लेना चाहता है। देती है केवल मालती उसके बाद मेहता। सिलिया और गोविन्दी भी धन से आशक्ति बढती है। लूटने की प्रवृति का विकास होता है। होरी के शोषक विदेशी नहीं गाँव के लोग है। दुलारी, भौजी, मातादीन, नोखेराम, पटेश्वरी, झिंगुरी आदि। ये खुद भी शोषित हैं। होरी न तो अपने अधिकार जानता है, न उसमें अधिकार रक्षा की क्षमता है। वह सबको डराने वाले आगा की दाढ़ी नोच सकता है, किन्तु राय साहब की एक छोटे से प्यादे के सामने साँस फूलने लगती है। राय और राजा धनवान है, पढ़े है, समझदार है, प्रेमचंद्र कहते हैं शहरों में एक वर्ग ऐसा भी है जो धनियों को बेबकूफ बनाता है, लड़ाता है, पैसे ऐंठता है। दोनों स्थानों में शोषक और शोषित का चक्र चल रहा है इस चक्र में छोटा दाना जल्दी पिस जाता है पिसना दोनों को है। प्रेमचंद्र इस पिसने की प्रवृति और व्यवस्था के विरोधी हैं। वे सन्यासी की खोज में हैं, आँख के अंधों की नहीं। होरी को पेट और प्रतिष्ठा की चिंता है इसी चिंता में रायसाहब ज्वालामुखी पर खडे हैं। खन्ना के द्वार पर सिर पटकते हैं, प्राण देते हैं, जहर खाते हैं। मित्र खन्ना कमीशन मांगता है जैसे दातादीन मरते होरी से गोदान का पैसा लेता है होरी और रायसाहब दोनों की आर्थिक स्थिति बिगड़ती है। दोनों की गर्दन पर महाजन का फंदा है, महाजन भी फंदे में है।

प्रेमचंद्र को गाँव प्रिय है किन्तु गाँव में भी अनेक बुराईयाँ हैं। गाँव गंदा है, स्वार्थी है, झगडालू और अपनों को लूटने वाला है फिर भी होरी स्वार्थ भीरू है। यह भीरूता गाँव के शोषकों में है। गोबर की निर्भीक स्पष्ट वादिता ने उस अनीति के बख्तर को बेच डाला है।

होरी पिस गया। रायसाहब का मुँह लटक गया। मिल मालिक की मार खाकर गोबर पिस रहा है। वह झुनिया के प्रति अमानव हो उठता है। शहरी दुहरा जीवन जीता है। भाषा और विचार में आदर्श व्यवहार में शोषक उसी शहर में एक गाँव है। होरी के गाँव से भिन्न गोबर, अलादीन, भूरे, चुहिया का गाँव। यह गाँव होरी के गाँव से भी भयानक है। चुहिया इसकी प्रतिनिधि है। दोहरी देह, काली कलूटी, नाटी, कुरूप, गरीब भी, असुन्दर भी किन्तु मानवता से भरी। मानवता इस शहरी गाँव में भी है किन्तु मेहता और मालती शहर में भी मानवता बसाते हैं। धन नहीं, सेवा। सेवा प्रेमचंद्र का आदर्श है। गाय की सेवा करने वाला किसान सबकी सेवा करता है। प्रवृति और निवृति दोनों के बीच में जो सेवा मार्ग है, चाहे उसे कर्मयोग ही कहो, वही जीवन को सार्थक कर सकता है।

गोदान में समाजवाद के उपासक राय साहब हैं किन्तु प्रेमचंद्र को समाजवाद की व्यवस्था में भी विश्वास नहीं है। साम्यवादी व्यवस्था की यह टीका गोबीचोब ने आज समझी लेकिन प्रेमचंद्र जी ने बहुत पहले ही समझ ली थी इसलिए प्रेमचंद्र व्यवस्था व्यक्ति और विचार तीनों में सुधार और समन्वय चाहते हैं। वे किसी वर्ग के लिए नहीं सम्पूर्ण मनुष्य के लिए चिंतित हैं।

fu"d"k

गोदान एक सामाजिक सरोकार को चरितार्थ करने वाला उत्कृष्ट उपन्यास है। गोदान का प्रमुख पात्र होरी सामान्य धर्म–भीरू पर व्यवहार बुद्धि से युक्त व्यक्ति है जो जीवन भर परिवार और समाज से तालमेल रखने की कोशिश में रहता है और राष्ट्रीय जीवन की बडी समस्याओं के प्रति भी जागरूक है। गोदान का रचना संतुलन ऐसा बेजोड़ है कि उसमें अनवरत् संघर्ष, करूणा, सहानुभूति और ट्रेजिक अंत के बावजूद कहीं किसी एक के प्रति कड़वाहट नहीं आती, गहरा असंतोष उमड़ता–घुमड़ता है। तन्त्र के प्रति गाँधी और मार्क्स को जैसे प्रेमचंद्र ने फेंटकर मिलाया हो ऐसा विधान लेखक के गहरे रचनात्मक आत्मविश्वास का प्रबल साक्ष्य है।

उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद्र की बड़ी सफलता इस बात में है कि उन्हांने अच्छी किस्सागोई को व्यापक

रचना दृष्टि के साथ जोड़ा है। प्रेमचंद्र जी ने भारतीय समाज की स्थिति और अभिव्यक्ति को रेखांकित किया है। उन्होंने अपनी कथा–भाषा का निर्माण करते हुए भाषा और समाज के संबंधों की चेतना स्थापित की है इसलिए उन्होंने जहां जिस वर्ग का चित्रण किया है, जिस समाज का निरूपण किया है, वह वर्ग और समाज गोदान की कथा–भाषा की शक्ति–सामर्थ्य के कारण अपने सहीपन और पूरेपन में भरकर सामने आ गया है। गोदान एक समस्या प्रधान उपन्यास है। इसमें प्रेमचंद्र जी ने ग्रामीण जीवन की कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं पर प्रकाश डाला है और उन्हें सुलझाने का संकेत किया है।

lanHkZ lwph

1. प्रेमचंद, *गोदान,* पृष्ठ क्र. 45, 47, 98, 262, 277, 278।
2. मिश्र सत्यप्रकाश, *गोदान का महत्व,* पृष्ठ क्र. 71, 73, 75।
3. गोस्वामी हरिहर प्रसाद, *गोदान पर एक दृष्टि,* पृष्ठ क्र. 231।
4. कुमार राकेश, *गोदान – इक्कीसवीं सदी का सच,* पृष्ठ क्र. 11–17।
5. झारी कृष्णदेव, *मुन्शी प्रेमचंद्र वृत गोदान,* पृष्ठ क्र. 98।

––==00==––